

Para 9

Sipara 9 of 30 · 159 Ayahs · Translation: Hindi

Al-A'raaf

88

۞ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۚ مِنْ قَوْمِهِ ۚ لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعِبُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كُرْهِينَ

तो उनकी क्रौम में से जिन लोगों को (अपनी हशमत (दुनिया पर) बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि ऐ शुएब हम तुम्हारे साथ ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर कर देंगे मगर जबकि तुम भी हमारे उसी मज़हब मिल्लत में लौट कर आ जाओ

89

قَدْ أَفْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهَ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ

हम अगरचे तुम्हारे मज़हब से नफरत ही रखते हों (तब भी लौट जाएँ माज़अल्लाह) जब तुम्हारे बातिल दीन से खुदा ने मुझे नजात दी उसके बाद भी अब अगर हम तुम्हारे मज़हब में लौट जाएँ तब हमने खुदा पर बड़ा झूठा बोहतान बाँधा (ना) और हमारे वास्ते तो किसी तरह जायज़ नहीं कि हम तुम्हारे मज़हब की तरफ लौट जाएँ मगर हाँ जब मेरा परवरदिगार अल्लाह चाहे तो हमारा परवरदिगार तो (अपने) इल्म से तमाम (आलम की) चीज़ों को घेरे हुए है हमने तो खुदा ही पर भरोसा कर लिया ऐ हमारे परवरदिगार तू ही हमारे और हमारी क्रौम के दरमियान ठीक ठीक फैसला कर दे और तू सबसे बेहतर फैसला करने वाला है

90

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ قَوْمِهِ ۚ لَئِنْ أَتَبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخُسِرُونَ

और उनकी क्रौम के चन्द सरदार जो काफिर थे (लोगों से) कहने लगे कि अगर तुम लोगों ने शुएब की पैरवी की तो उसमें शक ही नहीं कि तुम सख्त घाटे में रहोगे

91

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا ۚ فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ

गरज़ उन लोगों को ज़लजले ने ले डाला बस तो वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا ۚ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا ۚ كَانُوا هُمُ
الْخُسِرِينَ

जिन लोगों ने शुएब को झूठलाया था वह (ऐसे मर मिटे कि) गोया उन बस्तियों में कभी आबाद ही न थे जिन लोगों ने शुएब को झूठलाया वही लोग घाटे में रहे

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمٍ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ ءَاسَىٰ
عَلَى قَوْمٍ ۚ كُفْرِينَ

तब शुएब उन लोगों के सर से टल गए और (उनसे मुखातिब हो के) कहा ऐ मेरी क्रौम मैं ने तो अपने परवरदिगार के पैगाम तुम तक पहुँचा दिए और तुम्हारी खैर खाही की थी, फिर अब मैं काफिरों पर क्यों कर अफसोस करूँ

وَمَا اَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ ۚ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا اَخَذْنَا اَهْلَهَا بِالْبَاسِ ۚ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّعُونَ

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर वहाँ के रहने वालों को (कहना न मानने पर) सख्ती और मुसीबत में मुब्तिला किया ताकि वह लोग (हमारी बारगाह में) गिड़गिड़ाए

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا ۚ وَقَالُوا ۚ قَدْ مَسَّ ءَابَاؤُنَا الضَّرَّاءُ
وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

फिर हमने तकलीफ़ की जगह आराम को बदल दिया यहाँ तक कि वह लोग बड़ निकले और कहने लगे कि इस तरह की तकलीफ़ व आराम तो हमारे बाप दादाओं को पहुँच चुका है तब हमने (उस बदलने के की सज़ा में (अचानक उनको अज़ाब में) गिरफ्तार किया

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرَىٰ ءَامَنُوا ۚ وَاتَّقَوْا ۚ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ ۚ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ
وَلٰكِن كَذَّبُوا ۚ فَاَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

और वह बिल्कुल बेखबर थे और अगर उन बस्तियों के रहने वाले ईमान लाते और परहेज़गार बनते तो हम उन पर आसमान व ज़मीन की बरकतों (के दरवाजे) खोल देते मगर (अफसोस) उन लोगों ने (हमारे पैगम्बरों को) झूठलाया तो हमने भी उनके करतूतों की बदौलत उन को (अज़ाब में) गिरफ्तार किया

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَّتًا ۖ وَهُمْ نَائِمُونَ

(उन) बस्तियों के रहने वाले उस बात से बेखौफ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए जब कि वह पड़े बेखबर सोते हों

أَوْ أَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى ۖ وَهُمْ يُلْعَبُونَ

या उन बस्तियों वाले इससे बेखौफ हैं कि उन पर दिन दहाड़े हमारा अज़ाब आ पहुँचे जब वह खेल कूद (में मशगूल हो)

أَفَأَمِنُوا ۚ مَكَرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكَرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ

तो क्या ये लोग खुदा की तद्वीर से ढीट हो गए हैं तो (याद रहे कि) खुदा के दाँव से घाटा उठाने वाले ही निडर हो बैठे हैं

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن ۚ بَعْدِ أَهْلِهَا أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

क्या जो लोग अहले ज़मीन के बाद ज़मीन के वारिस (व मालिक) होते हैं उन्हें ये मालूम नहीं कि अगर हम चाहते तो उनके गुनाहों की बदौलत उनको मुसीबत में फँसा देते (मगर ये लोग ऐसे नासमझ हैं कि गोया) उनके दिलों पर हम खुद (मोहर कर देते हैं कि ये लोग कुछ सुनते ही नहीं)

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ ۚ بَأْيَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ بِمَا كَذَّبُوا ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ

(ऐ रसूल) ये चन्द बस्तियाँ हैं जिन के हालात हम तुमसे बयान करते हैं और इसमें तो शक ही नहीं कि उनके पैग़म्बर उनके पास वाजेए व रौशन मौजिज़े लेकर आए मगर ये लोग जिसके पहले झुठला चुके थे उस पर भला काहे को ईमान लाने वाले थे खुदा यूँ काफ़िरों के दिलों पर अलामत मुकर्रर कर देता है (कि ये ईमान न लाएँगे)

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ

और हमने तो उसमें से अक्सरों का एहद (ठीक) न पाया और हमने उनमें से अक्सरों को बदकार ही पाया

103

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْهُ بَعْدَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ فَظَلَمُوا ۚ بِهَا ۚ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُفْسِدِينَ

फिर हमने (उन पैग़म्बरान मज़कूरीन के बाद) मूसा को फिरऔन और उसके सरदारों के पास मौजिज़े अता करके (रसूल बनाकर) भेजा तो उन लोगों ने उन मौजिज़ात के साथ (बड़ी बड़ी) शरारतों की पस ज़रा गौर तो करो कि आखिर फसादियों का अन्जाम क्या हुआ

104

وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرِعُونَ إِنِّي رَسُولٌ ۙ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और मूसा ने (फिरऔन से) कहा ऐ फिरऔनमें यक़ीनन परवरदिगारे आलम का रसूल हूँ

105

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَىٰ اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ
مَعِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ

मुझ पर वाजिब है कि खुदा पर सच के सिवा (एक हरमत भी झूठ) न कहूँ मैं यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाजेए व रोशन मौजिज़े लेकर आया हूँ

106

قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ ۚ فَأْتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

तो तू बनी ईसराइल को मेरे हमराह करे दे फिरऔन कहने लगा अगर तुम सच्चे हो और वाकई कोई मौजिज़ा लेकर आए हो तो उसे दिखाओ

107

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

(ये सुनते ही) मूसा ने अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दी पस वह यकायक (अच्छा खासा) ज़ाहिर बज़ाहिर अजदहा बन गई

108

وَنَزَعَ يَدَهُ ۚ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِينَ

और अपना हाथ बाहर निकाला तो क्या देखते हैं कि वह हर शख्स की नज़र में जगमगा रहा है

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ عَلِيمٌ ۝

तब फिरऔन के क्रौम के चन्द सरदारों ने कहा ये तो अलबत्ता बड़ा माहिर जादूगर है

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۝ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ

ये चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर कर दे तो अब तुम लोग उसके बारे में क्या सलाह देते हो

قَالُوا ۝ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ

(आखिर) सबने मुत्तफिक अलफाज (एक ज़बान होकर) कहा कि (ऐ फिरऔन) उनको और उनके भाई (हारून) को चन्द दिन कैद में रखिए और (एतराफ़ के) शहरों में हरकारों को भेजिए

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ۝

कि तमाम बड़े बड़े जादूगरों का जमा करके आपके पास दरबार में हाज़िर करें

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا ۝ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ

गरज जादूगर सब फिरऔन के पास हाज़िर होकर कहने लगे कि अगर हम (मूसा से) जीत जाएं तो हमको बड़ा भारी इनाम जरूर मिलना चाहिए

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ

फिरऔन ने कहा (हाँ इनाम ही नहीं) बल्कि फिर तो तुम हमारे दरबार के मुकर्रेबीन में से होगें

قَالُوا ۝ يَمُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ

और मुकरर वक्त पर सब जमा हुए तो बोल उठे कि ऐ मूसा या तो तुम्हें (अपने मुत्तसिर (मंत्र)) या हम ही (अपने अपने मंत्र फेके)

116

قَالَ أَلْقُوا ۚ ۚ فَلَمَّا أَلْقَوْا ۚ سَحَرُوا ۚ أَعْيِنَ النَّاسِ وَأَسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرِ عَظِيمٍ ۚ

मूसा ने कहा (अच्छा पहले) तुम ही फेक (के अपना हौसला निकालो) तो तब जो ही उन लोगों ने (अपनी रस्सियाँ) डाली तो लोगों की नज़र बन्दी कर दी (कि सब साँप मालूम होने लगे) और लोगों को डरा दिया

117

ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ

और उन लोगों ने बड़ा (भारी जादू दिखा दिया और हमने मूसा के पास वही भेजी कि (बैठे क्या हो) तुम भी अपनी छड़ी डाल दो तो क्या देखते हैं कि वह छड़ी उनके बनाए हुए (झूठे साँपों को) एक एक करके निगल रही है

118

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

अल किस्सा हक़ बात तो ज़म के बैठी और उनकी सारी कारस्तानी मटियामेट हो गई

119

فَغُلِبُوا ۚ هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا ۚ صَغِيرِينَ

पस फिरऔन और उसके तरफदार सब के सब इस अखाड़े में हारे और ज़लील व रूसवा हो के पलटे

120

وَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجُودًا

और जादूगर सब मूसा के सामने सजदे में गिर पड़े

121

قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

और (आजिज़ी से) बोले हम सारे जहाँन के परवरदिगार पर ईमान लाए

122

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

जो मूसा व हारून का परवरदिगार है

قَالَ فِرْعَوْنُ ءَامَنْتُمْ بِهِ؟ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مِّمَّكَرَ ۖ مَكْرَتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا ۚ مِنْهَا أَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

फिरऔन ने कहा (हाए) तुम लोग मेरी इजाज़त के क़बल (पहले) उस पर ईमान ले आए ये ज़रूर तुम लोगों की मक्कारी है जो तुम लोगों ने उस शहर में फैला रखी है ताकि उसके बाशिन्दों को यहाँ से निकाल कर बाहर करो पस तुम्हें अन करीब ही उस शरारत का मज़ा मालूम हो जाएगा

لَأَقْطِعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خَلْفٍ ۚ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ

मै तो यक़ीनन तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव कटवा डालूँगा फिर तुम सबके सब को सूली दे दूँगा

قَالُوا ۚ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ

जादूगर कहने लगे हम को तो (आख़िर एक रोज़) अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना (मर जाना) है

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ ءَامَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۚ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا ۚ وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ

तू हमसे उसके सिवा और काहे की अदावत रखता है कि जब हमारे पास खुदा की निशानियाँ आयी तो हम उन पर ईमान लाए (और अब तो हमारी ये दुआ है कि) ऐ हमारे परवरदिगार हम पर सब्र (का मेंह बरसा)

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ ۚ لِيُفْسِدُوا ۚ فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَءَالِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي ۚ نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ

और हमने अपनी फरमावरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और फिरऔन की क़ौम के चन्द सरदारों ने (फिरऔन) से कहा कि क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को उनकी हालत पर छोड़ देंगे कि मुल्क में फ़साद करते फ़िरे और आपके और आपके खुदाओं (की परसतिश) को छोड़ बैठें- फिरऔन कहने लगा (तुम घबराओ नहीं) हम अनक़रीब ही उनके बेटों की क़त्ल करते हैं और उनकी औरतों को (लौन्डियाँ बनाने के वास्ते) जिन्दा रखते हैं और हम तो उन पर हर तरह क़ाबू रखते हैं

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَأَصْبِرُوا ۚ ۚ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَالْعُقُوبَةُ لِلْمُتَّقِينَ

(ये सुनकर) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि (भाइयों) खुदा से मदद माँगों और सब्र करो सारी ज़मीन तो खुदा ही की है वह अपने बन्दों में जिसकी चाहे उसका वारिस (व मालिक) बनाए और खातमा बिल खैर तो सब परहेज़गार ही का है

قَالُوا ۚ أَوَظَنَّا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِنَا وَمِنْ ۚ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ

वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) तुम्हारे आने के क़बल (पहले) ही से और तुम्हारे आने के बाद भी हम को तो बराबर तकलीफ़ ही पहुँच रही है (आखिर कहाँ तक सब्र करें) मूसा ने कहा अनकरीब ही तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक़ करेगा और तुम्हें (उसका जानशीन) बनाएगा फिर देखेगा कि तुम कैसा काम करते हो

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ ۚ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذْكُرُونَ

और बेशक हमने फिरऔन के लोगों को बरसों से कहत और फलों की कम पैदावार (के अज़ाब) में गिरफ्तार किया ताकि वह इबरत हासिल करें

فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا ۚ لَنَا هَذِهِ ۚ ۚ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۚ يَطَّيَّرُوا ۚ بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ ۚ ۚ أَلَا إِنَّمَا طَّيَّرُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

तो जब उन्हें कोई राहत मिलती तो कहने लगते कि ये तो हमारे लिए सज़ावार ही है और जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती तो मूसा और उनके साथियों की बदशुगूनी समझते देखो उनकी बदशुगूनी तो खुदा के हा (लिखी जा चुकी) थी मगर बहुतेरे लोग नही जानते हैं

وَقَالُوا ۚ مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ ۚ ۚ مِنْ ۚ ءَايَةٍ ۚ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ

और फिरऔन के लोग मूसा से एक मरतबा कहने लगे कि तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जितनी निशानियाँ लाओ मगर हम तुम पर किसी तरह ईमान नहीं लाएँगे

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالْدَّمَ ؕ ؕ مَفْصَلَتٍ ۚ
فَاسْتَكْبَرُوا ۚ وَكَانُوا ۚ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ

तब हमने उन पर (पानी को) तूफान और टिड़डियाँ और जुएं और मेंढकों और खून (का अज़ाब भेजा कि सब जुदा जुदा (हमारी कुदरत की) निशानियाँ थी उस पर भी वह लोग तकबुर ही करते रहें और वह लोग गुनेहगार तो थे ही

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا ۚ يُمُوسَىٰ أَدْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَءِيلَ

(और जब उन पर अज़ाब आ पड़ता तो कहने लगते कि ऐ मूसा तुम से जो खुदा ने (क़बूल हुआ का) अहद किया है उसी की उम्मीद पर अपने खुदा से दुआ माँगें और अगर तुमने हम से अज़ाब को टाल दिया तो हम ज़रूर भेज देंगे

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بَلَّغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ

फिर जब हम उनसे उस वक्त के वास्ते जिस तक वह ज़रूर पहुँचते अज़ाब को हटा लेते तो फिर फौरन बद अहदी करने लगते

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَكَانُوا ۚ عَنْهَا غُفْلِينَ

तब आखिर हमने उनसे (उनकी शरारत का) बदला लिया तो चूँकि वह लोग हमारी आयतों को झुटलाते थे और उनसे ग़ाफ़िल रहते थे हमने उन्हें दरिया में डुबो दिया

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا ۚ يُسْتَضْعَفُونَ مَشْرِقَ الْأَرْضِ وَمَغْرِبَهَا ۚ الَّتِي بَرَكْنَا
فِيهَا ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ بِمَا صَبَرُوا ۚ ۚ وَدَمَّرْنَا مَا
كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ ۚ وَمَا كَانُوا ۚ يَعْرِشُونَ

और जिन बेचारों को ये लोग कमज़ोर समझते थे उन्हीं को (मुल्क शाम की) ज़मीन का जिसमें हमने (ज़रखेज़ होने की) बरकत दी थी उसके पूरब पश्चिम (सब) का वारिस (मालिक) बना दिया और चूँकि बनी इसराइल ने (फिरऔन के ज़ालिमों) पर सब्र किया था इसलिए तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा (जो उसने बनी इसराइल से किया था) पूरा हो गया और जो कुछ फिरऔन और उसकी क़ौम के लोग करते थे और जो ऊँची ऊँची इमारते बनाते थे सब हमने बरबाद कर दी

وَجُوزَنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا ۚ عَلَى قَوْمٍ ۚ يَعْكُفُونَ عَلَى أَصْنَامٍ ۚ لَهُمْ ۚ
قَالُوا ۚ يَمُوسَى اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا ۚ كَمَا لَهُمْ ءَالِهَةٌ ۚ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ

और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार उतार दिया तो एक ऐसे लोगों पर से गुज़रे जो अपने (हाथों से बनाए हुए) बुतों की परसतिश पर जमा बैठे थे (तो उनको देख कर बनी इसराइल से) कहने लगे ऐ मूसा जैसे उन लोगों के माबूद (बुत) हैं वैसे ही हमारे लिए भी एक माबूद बनाओ मूसा ने जवाब दिया कि तुम लोग जाहिल लोग हो

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَبَرِّءُونَ ۚ مَا هُمْ فِيهِ وَيَطِلُونَ ۚ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

(अरे कमबख्तो) ये लोग जिस मज़हब पर हैं (वह यक़ीनी बरबाद होकर रहेगा) और जो अमल ये लोग कर रहे हैं (वह सब मिटिया मेट हो जाएगा)

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا ۚ وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ

(मूसा ने ये भी) कहा क्या तुम्हारा ये मतलब है कि खुदा को छोड़कर मैं दूसरे को तुम्हारा माबूद तलाश करूँ

وَإِذْ أَنْجَيْنَاكَ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكَ سُوءَ الْعَذَابِ ۚ يُقْتَلُونَ أَبْنَاءَكَ ۚ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكَ ۚ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ ۚ مِنْ رَبِّكَ عَظِيمٌ ۚ

हालाँकि उसने तुमको सारी खुदाई पर फज़ीलत दी है (ऐ बनी इसराइल वह वक्त याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन के लोगों से नजात दी जब वह लोग तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें पहुंचाते थे तुम्हारे बेटों को तो (चुन चुन कर) क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (लौन्डियों बनाने के वास्ते ज़िन्दा रख छोड़ते) और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे (सब्र की) सख्त आजमाइश थी

ۚ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً ۚ وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ ۚ فَتَمَّ مِيقَتُ رَبِّهِ ۚ ۚ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ ۚ

وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ أَخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ

और हमने मूसा से तौरैत देने के लिए तीस रातों का वायदा किया और हमने उसमें दस रोज़ बढ़ाकर पूरा कर दिया गरज़ उसके परवरदिगार का वायदा चालीस रात में पूरा हो गया और (चलते वक्त) मूसा ने अपने भाई हारून कहा कि तुम मेरी क़ौम में मेरे जानशीन रहो और उनकी इसलाह करना और फ़साद करने वालों के तरीक़े पर न चलना

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۚ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرِنِي وَلَكِنْ أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ ۚ فَسَوْفَ تَرِنِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا ۚ وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا ۚ أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ

और जब मूसा हमारा वायदा पूरा करते (कोहेतूर पर) आए और उनका परवरदिगार उनसे हम कलाम हुआ तो मूसा ने अर्ज किया कि खुदाया तू मेझे अपनी एक झलक दिखला दे कि मैं तूझे देखूँ खुदा ने फरमाया तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते मगर हों उस पहाड़ की तरफ देखो (हम उस पर अपनी तजल्ली डालते हैं) पस अगर (पहाड़) अपनी जगह पर कायम रहे तो समझना कि अनकरीब मुझे भी देख लो (वरना नहीं) फिर जब उनके परवरदिगार ने पहाड़ पर तजल्ली डाली तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े फिर जब होश में आए तो कहने लगे खुदा वन्दा तू (देखने दिखाने से) पाक व पाकीज़ा है-मैंने तेरी बारगाह में तौबा की और मैं सब से पहले तेरी अदम रवायत का यक़ीन करता हूँ

قَالَ يَمُوسَىٰ إِنِّي أُصْطَفِيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلِمِي فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ

खुदा ने फरमाया ऐ मूसा मैंने तुमको तमाम लोगों पर अपनी पैगम्बरी और हम कलामी (का दरजा देकर) बरगूज़ीदा किया है तब जो (किताब तौरैत) हमने तुमको अता की है उसे लो और शुक्रगुज़ार रहो

وَكَتَبْنَا لَهُ ۚ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ ۚ مَّوْعِظَةً ۚ وَتَفْصِيلًا ۚ لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ ۚ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا ۚ بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ

और हमने (तौरैत की) तख्तियों में मूसा के लिए हर तरह की नसीहत और हर चीज़ का तफसीलदार बयान लिख दिया था तो (ऐ मूसा) तुम उसे मज़बूती से तो (अमल करो) और अपनी क़ौम को हुक्म दे दो कि उसमें की अच्छी बातों पर अमल करें और बहुत जल्द तुम्हें बदकिरदारों का घर दिखा दूँगा (कि कैसे उजड़ते हैं)

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا ۚ كُلَّ آيَةٍ ۚ
لَا يُؤْمِنُوا ۚ بِهَا وَإِنْ يَرَوْا ۚ سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا ۚ سَبِيلَ الْغَيِّ
يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ

जो लोग (खुदा की) ज़मीन पर नाहक अकड़ते फिरते हैं उनको अपनी आयतों से बहुत जल्द फेर दूंगा और मैं क्या फेरूंगा खुदा (उसका दिल ऐसा सख्त है कि) अगर दुनिया जहाँ के सारे मौजिज़े भी देखते तो भी ये उन पर ईमान न लाएंगे और (अगर) सीधा रास्ता भी देख पाएं तो भी अपनी राह न जाएंगे और अगर गुमराही की राह देख लेंगे तो झटपट उसको अपना तरीका बना लेंगे ये कजरवी इस सबब से हुई कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झूठला दिया और उनसे शफलत करते रहे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ آلِ آخِرَةٍ حَبِطَتْ أَعْمَلُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا ۚ
يَعْمَلُونَ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आखिरत की हुज़ूरी को झूठलाया उनका सब किया कराया अकारत हो गया, उनको बस उन्हीं आमाल की जज़ा या सज़ा दी जाएगी जो वह करते थे

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا ۚ جَسَدًا ۚ لَهُ ۚ خُورًا ۚ أَلَمْ
يَرَوْا ۚ أَنَّهُ ۚ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ

और मूसा की क़ौम ने (कोहेतूर पर) उनके जाने के बाद अपने जेवरों को (गलाकर) एक बछड़े की मूरत बनाई (यानि) एक जिस्म जिसमें गाए की सी आवाज़ थी (अफसोस) क्या उन लोगों ने इतना भी न देखा कि वह न तो उनसे बात ही कर सकता और न किसी तरह की हिदायत ही कर सकता है (खुलासा) उन लोगों ने उसे (अपनी माबूद बना लिया)

وَلَمَّا سَقَطَ فِي ۚ أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا ۚ أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا ۚ قَالُوا ۚ لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ
لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

और आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे और जब वह पछताए और उन्होंने अपने को यक़ीनी गुमराह देख लिया तब कहने लगे कि अगर हमारा परदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हमारा कुसूर न माफ़ करेगा तो हम यक़ीनी घाटा उठाने वालों में हो जाएंगे

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ غَضِبْنَ عَلَيْهِ ۖ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن ۖ بَعْدِي ۖ ۚ
 أَعَجَلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ ۚ وَالْقَى الْأَلْوَا حَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ ۖ إِلَيْهِ ۖ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ
 إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّفُونِي وَكَادُوا ۖ يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ
 الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और जब मूसा पलट कर अपनी क़ौम की तरफ आए तो (ये हालत देखकर) रंज व गुस्से में (अपनी क़ौम से) कहने लगे कि तुम लोगों ने मेरे बाद बहुत बुरी हरकत की-तुम लोग अपने परवरदिगार के हुक्म (मेरे आने में) किस कदर जल्दी कर बैठे और (तौरत की) तख्तियों को फेंक दिया और अपने भाई (हारून) के सर (के बालों को पकड़ कर अपनी तरफ खींचने लगे) उस पर हारून ने कहा ऐ मेरे मांजाए (भाई) मैं क्या करता क़ौम ने मुझे हकीर समझा और (मेरा कहना न माना) बल्कि क़रीब था कि मुझे मार डाले तो मुझ पर दुश्मनों को न हँसवाइए और मुझे उन ज़ालिम लोगों के साथ न करार दीजिए

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ

तब) मूसा ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार मुझे और मेरे भाई को बख्श दे और हमें अपनी रहमत में दाखिल कर और तू सबसे बढ़के रहम करने वाला है

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا ۖ الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ ۖ ۚ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ ۖ ۚ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ۚ
 وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (अपना माबूद) बना लिया उन पर अनक़रीब ही उनके परवरदिगार की तरफ से अज़ाब नाज़िल होगा और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत (उसके अलावा) और हम बोहतान बाँधने वालों की ऐसी ही सज़ा करते हैं

وَالَّذِينَ عَمِلُوا ۖ السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا ۖ ۚ مِن ۖ بَعْدِهَا وَعَٰمَنُوا ۖ ۚ إِنَّ رَبَّكَ مِن ۖ بَعْدِهَا
 لَغَفُورٌ ۖ ۚ رَّحِيمٌ ۖ ۚ

और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान लाए तो बेशक तुम्हारा परवरदिगार तौबा के बाद ज़रूर बख्शने वाला मेहरबान है

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۚ وَفِي نُسخَتِهَا هُدًى ۚ وَرَحْمَةٌ ۚ
لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ

और जब मूसा का गुस्सा ठण्डा हुआ तो (तौरैत) की तख्तियों को (जमीन से) उठा लिया और तौरैत के नुस्खे में जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं उनके लिए हिदायत और रहमत है

وَأَخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ ۚ سَبْعِينَ رَجُلًا ۖ لِّمِيقَاتِنَا ۚ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ
شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّيَ ۚ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ
تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۚ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ وَأَنْتَ
خَيْرُ الْغَافِرِينَ

और मूसा ने अपनी कौम से हमारा वायदा पूरा करने को (कोहतूर पर ले जाने के वास्ते) सत्तर आदमियों को चुना फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया परवरदिगार अगर तू चाहता तो मुझको और उन सबको पहले ही हलाक कर डालता क्या हम में से चन्द बेवकूफों की करनी की सज़ा में हमको हलाक करता है ये तो सिर्फ तेरी आजमाइश थी तू जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत दे तू ही हमारा मालिक है तू ही हमारे कुसूर को माफ कर और हम पर रहम कर और तू तो तमाम बख्शने वालों से कहीं बेहतर है

ۚ وَأَكْتُبْ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً ۚ وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي
أُصِيبُ بِهِ ۚ مَن أَشَاءُ ۚ وَرَحِمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ

और तू ही इस दुनिया (फ़ानी) और आखिरत में हमारे वास्ते भलाई के लिए लिख ले हम तेरी ही तरफ रूझू करते हैं खुदा ने फरमाया जिसको मैं चाहता हूँ (मुस्तहक़ समझकर) अपना अज़ाब पहुँचा देता हूँ और मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई है मैं तो उसे बहुत जल्द खास उन लोगों के लिए लिख दूँगा (जो बुरी बातों से) बचते रहेंगे और ज़कात दिया करेंगे और जो हमारी बातों पर ईमान रखा करेंगे

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ ۚ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ بِهِ ۚ
وَعَزَّزُوا وَنَصَرُواهُ وَاتَّبَعُوا ۙ النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

(यानि) जो लोग हमारे बनी उल उम्मी पैगम्बर के क़दम बा क़दम चलते हैं जिस (की बशारत) को अपने हों तौरैत और इन्जील में लिखा हुआ पाते है (वह नबी) जो अच्छे काम का हुक्म देता है और बुरे काम से रोकता है और जो पाक व पाकीज़ा चीजे तो उन पर हलाल और नापाक गन्दी चीजे उन पर हराम कर देता है और (सख्त एहकाम का) बोझ जो उनकी गर्दन पर था और वह फन्दे जो उन पर (पड़े हुए) थे उनसे हटा देता है पस (याद रखो कि) जो लोग (नबी मोहम्मद) पर ईमान लाए और उसकी इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर (कुरान) की पैरवी की जो उसके साथ नाज़िल हुआ है तो यही लोग अपनी दिली मुरादे पाएंगे

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ ۙ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۙ ۚ
لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِ ۙ وَيُمِيتُ ۙ ۚ فَآمِنُوا ۙ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَكَلِمَتِهِ ۙ ۚ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

(ऐ रसूल) तुम (उन लोगों से) कह दो कि लोगों में तुम सब लोगों के पास उस खुदा का भेजा हुआ (पैगम्बर) हूँ जिसके लिए खास सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत (हुकूमत) है उसके सिवा और कोई माबूद नहीं वही ज़िन्दा करता है वही मार डालता है पस (लोगों) खुदा और उसके रसूल नबी उल उम्मी पर ईमान लाओ जो (खुद भी) खुदा पर और उसकी बातों पर (दिल से) ईमान रखता है और उसी के क़दम बा क़दम चलो ताकि तुम हिदायत पाओ

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ ۙ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ ۙ يَعْدِلُونَ

और मूसा की क़ौम के कुछ लोग ऐसे भी है जो हक़ बात की हिदायत भी करते हैं और हक़ के (मामलात में) इन्साफ़ भी करते हैं

وَقَطَّعْنَاهُمْ أَثْنَتَى عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ ۚ
 أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانفَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ ۚ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
 أُنَاسٍ ۚ مَّشْرِبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَمَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰ وَالسَّلْوَىٰ ۚ ۚ كُلُوا ۚ
 مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

और हमने बनी ईसराइल के एक एक दादा की औलाद को जुदा जुदा बारह गिरोह बना दिए और जब मूसा की क्रौम ने उनसे पानी माँगा तो हमने उनके पास वही भेजी कि तुम अपनी छड़ी पत्थर पर मारो (छड़ी मारना था) कि उस पत्थर से पानी के बारह चश्मे फूट निकले और ऐसे साफ साफ अलग अलग कि हर कबीले ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया और हमने बनी ईसराइल पर अब्र (बादल) का साया किया और उन पर मन व सलवा (सी नेअमत) नाज़िल की (लोगों) जो पाक (पाकीज़ा) चीज़े तुम्हें दी हैं उन्हें (शौक से खाओ पियो) और उन लोगों ने (नाफरमानी करके) कुछ हमारा नहीं बिगाड़ा बल्कि अपना आप ही बिगाड़ते हैं

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا ۚ هَذِهِ الْقَرْيَةُ وَكُلُوا ۚ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا ۚ حِطَّةٌ ۚ
 وَأَدْخُلُوا ۚ أَلْبَابَ سُجَّدٍ ۚ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ

और जब उनसे कहा गया कि उस गाँव में जाकर रहो सहो और उसके मेवों से जहाँ तुम्हारा जी चाहे (शौक से) खाओ (पियो) और मुँह से हुतमा कहते और सजदा करते हुए दरवाजे में दाखिल हो तो हम तुम्हारी खताएँ बख्श देंगे और नेकी करने वालों को हम कुछ ज्यादा ही देंगे

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا ۚ ۚ مِّنَ
 السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ

तो ज़ालिमों ने जो बात उनसे कही गई थी उसे बदल कर कुछ और कहना शुरू किया तो हमने उनकी शरारतों की बदौलत उन पर आसमान से अज़ाब भेज दिया

وَسَلُّهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ
حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا ۖ وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۖ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَلِكَ نَبْلُوهُمْ بِمَا
كَانُوا ۚ يَفْسُقُونَ

और (ऐ रसूल) उनसे ज़रा उस गाँव का हाल तो पूछो जो दरिया के किनारे वाक़ाए था जब ये लोग उनके बुज़ुर्ग शुम्बे (सनीचर) के दिन ज्यादाती करने लगे कि जब उनका शुम्बे (वाला इबादत का) दिन होता तब तो मछलियाँ सिमट कर उनके सामने पानी पर उभर के आ जाती और जब उनका शुम्बा (वाला इबादत का) दिन न होता तो मछलियाँ उनके पास ही न फटकती और चूँकि ये लोग बदचलन थे उस दरजे से हम भी उनकी यूँ ही आजमाइश किया करते थे

وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ ۖ مِّنْهُمْ لَمَّ تَعْطُونَ قَوْمًا ۖ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا ۖ
شَدِيدًا ۖ قَالُوا ۖ مَعْدَرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

और जब उनमें से एक जमाअत ने (उन लोगों में से जो शुम्बे के दिन शिकार को मना करते थे) कहा कि जिन्हें खुदा हलाक करना या सख्त अज़ाब में मुब्तिला करना चाहता है उन्हें (बेफायदे) क्यों नसीहत करते हो तो वह कहने लगे कि फ़क़त तुम्हारे परवरदिगार में (अपने को) इल्ज़ाम से बचाने के लिए यायद इसलिए कि ये लोग परहेज़गारी एख्तियार करें

فَلَمَّا نَسُوا ۖ مَا ذُكِّرُوا ۖ بِهِ ۖ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ
ظَلَمُوا ۖ بِعَذَابٍ ۖ بَئِيسٍ ۖ بِمَا كَانُوا ۖ يَفْسُقُونَ

फिर जब वह लोग जिस चीज़ की उन्हें नसीहत की गई थी उसे भूल गए तो हमने उनको तो तजावीज़ (नजात) दे दी जो बुरे काम से लोगों को रोकते थे और जो लोग ज़ालिम थे उनको उनकी बद चलनी की वजह से बड़े अज़ाब में गिरफ्तार किया

فَلَمَّا عَتَوْا ۖ عَنْ مَا نُهُوا ۖ عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا ۖ قِرَدَةً خَاسِئِينَ

फिर जिस बात की उन्हें मुमानिअत (रोक) की गई थी जब उन लोगों ने उसमें सरकशी की तो हमने हुक्म दिया कि तुम ज़लील और ख़्वार (धुत्कारे) हुए बन्दर बन जाओ (और वह बन गए)

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّهُ ۚ لَغَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल वह वक्त याद दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने पुकार पुकार के (बनी ईसराइल से कह दिया था कि वह क़यामत तक उन पर ऐसे हाक़िम को मुसल्लत देखेगा जो उन्हें बुरी बुरी तकलीफें देता रहे क्योंकि) इसमें तो शक़ ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक़ नहीं कि वह बड़ा बख़्शने वाला (मेहरबान) भी है

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۚ مِنْهُمْ الْأَصْلِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ ۚ وَبَلَّوْنَهُمْ
بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और हमने उनको रूए ज़मीन में गिरोह गिरोह तितिर बितिर कर दिया उनमें के कुछ लोग तो नेक हैं और कुछ लोग और तरह के (बदकार) हैं और हमने उन्हें सुख और दुख (दोनों तरह) से आजमाया ताकि वह (शरारत से) बाज़ आए

فَخَلَفَ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ ۚ وَرِثُوا ۚ أَلْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ
سَيَغْفِرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ ۚ مِثْلُهَا ۚ يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَنْ
لَا يَقُولُوا ۚ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا ۚ مَا فِيهِ ۚ وَالْدَارُ أَلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ ۚ لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

फिर उनके बाद कुछ जानशीन हुए जो किताब (खुदा तौरैत) के तो वारिस बने (मगर लोगों के कहने से एहकामे खुदा को बदलकर (उसके ऐवज़) नापाक कमीनी दुनिया के सामान ले लेते हैं (और लुत्फ तो ये है) कहते हैं कि हम तो अनक़रीब बख़्श दिए जाएंगे (और जो लोग उन पर तान करते हैं) अगर उनके पास भी वैसा ही (दूसरा सामान आ जाए तो उसे ये भी न छोड़े और) ले ही लें क्या उनसे किताब (खुदा तौरैत) का एहदो पैमान नहीं लिया गया था कि खुदा पर सच के सिवा (झूठ कभी) नहीं कहेंगे और जो कुछ उस किताब में है उन्होंने (अच्छी तरह) पढ़ लिया है और आखिर का घर तो उन्हीं लोगों के वास्ते खास है जो परहेज़गार हैं तो क्या तुम (इतना भी नहीं समझते)

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ

और जो लोग किताब (खुदा) को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं (उन्हें उसका सवाब ज़रूर मिलेगा क्योंकि) हम हरगिज़ नेकोकारों का सवाब बरबाद नहीं करते

﴿ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ ﴾ ﴿ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا ﴾ ﴿ مَا ءَاتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ ﴾ ﴿ وَأَذْكُرُوا ﴾ ﴿ مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴾

तो (ऐ रसूल यहूद को याद दिलाओ) जब हम ने उन (के सरो) पर पहाड़ को इस तरह लटका दिया कि गोया साएबान (छप्पर) था और वह लोग समझ चुके थे कि उन पर अब गिरा और हमने उनको हुक्म दिया कि जो कुछ हमने तुम्हें अता किया है उसे मजबूती से पकड़ लो और जो कुछ उसमें लिखा है याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ

﴿ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنَىٰ آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ﴾ ﴿ قَالُوا بَلَىٰ ﴾ ﴿ شَهِدْنَا ﴾ ﴿ أَنْ تَقُولُوا ﴾ ﴿ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غٰفِلِينَ ﴾

और उसे रसूल वह वक्त भी याद (दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम की औलाद से बस्तियों से (बाहर निकाल कर) उनकी औलाद से खुद उनके मुकाबले में एकरार कर लिया (पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम उसके गवाह हैं ये हमने इसलिए कहा कि ऐसा न हो कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे

﴿ أَوْ تَقُولُوا ﴾ ﴿ إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً ﴾ ﴿ مِّنْ ﴾ ﴿ بَعْدِهِمْ ﴾ ﴿ أَفْتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴾

या ये कह बैठो कि (हम क्या करें) हमारे तो बाप दादाओं ही ने पहले शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे (कि) उनके बाद दुनिया में आए तो क्या हमें उन लोगों के ज़ुर्म की सज़ा में हलाक करेगा जो पहले ही बातिल कर चुके

﴿ وَكَذٰلِكَ نَفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴾

और हम यूँ अपनी आयतों को तफ़सीलदार बयान करते हैं और ताकि वह लोग (अपनी ग़लती से) बाज़ आएं

﴿ وَآتٰلُ عَلَيْهِمْ نَبَأُ الَّذِي ءَاتَيْنَاهُ ءَايٰتِنَا فَٱنْسَلَخَ مِنْهَا فَٱتَّبَعَهُ ٱلشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ ٱلْغَٰوِينَ ﴾

और (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस शख्स का हाल पढ़ कर सुना दो जिसे हमने अपनी आयतें अता की थी फिर वह उनसे निकल भागा तो शैतान ने उसका पीछा पकड़ा और आखिरकार वह गुमराह हो गया

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ ۖ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۚ فَمَثَلُهُ ۚ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكُهُ يَلْهَثُ ۚ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ
بِآيَاتِنَا ۚ فَأَقْصِصْ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

और अगर हम चाहें तो हम उसे उन्हें आयतों की बदौलत बुलन्द मरतबा कर देते मगर वह तो खुद ही पस्ती (नीचे) की तरफ झुक पड़ा और अपनी नफसानी ख्वाहिश का ताबेदार बन बैठा तो उसकी मसल है कि अगर उसको धुत्कार दो तो भी ज़बान निकाले रहे और उसको छोड़ दो तो भी ज़बान निकले रहे ये मसल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (ऐ रसूल) ये किस्से उन लोगों से बयान कर दो ताकि ये लोग खुद भी ग़ौर करें

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ كَانُوا ۚ يَظْلِمُونَ

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है उनकी भी क्या बुरी मसल है और अपनी ही जानों पर सितम ढाते रहे

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِى ۚ وَمَنْ يُضِلِلْ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

राह पर बस वही शरूष है जिसकी खुदा हिदायत करे और जिनको गुमराही में छोड़ दे तो वही लोग घाटे में हैं

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۚ لَهُمْ قُلُوبٌ ۚ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ
أَعْيُنٌ ۚ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ ءَاذَانٌ ۚ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُو۟لَٰئِكَ كَآلَ الْاَنْعَمِ بَلْ هُمْ
أَضَلُّ ۚ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْغٰفِلُونَ

और गोया हमने (खुदा) बहुतेरे जिन्नात और आदमियों को जहन्नुम के वास्ते पैदा किया और उनके दिल तो हैं (मगर कसदन) उन से देखते ही नहीं और उनके कान भी है (मगर) उनसे सुनने का काम ही नहीं लेते (खुलासा) ये लोग गोया जानवर हैं बल्कि उनसे भी कहीं गए गुज़रे हुए यही लोग (अमूर हक़) से बिल्कुल बेखबर हैं

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۚ وَذَرُوا ۚ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِيٓ أَسْمَآئِهِ ۚ ۚ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

और अच्छे (अच्छे) नाम खुदा ही के खास हैं तो उसे उन्हीं नामों में पुकारो और जो लोग उसके नामों में कुफ़र करते हैं उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दो और वह बहुत जल्द अपने करतूत की सज़ाएं पाएंगे

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً ۖ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ ۚ يَعْدِلُونَ

और हमारी मखलूक़ात से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दीने हक़ की हिदायत करते हैं और हक़ से इन्साफ़ भी करते हैं

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया हम उन्हें बहुत जल्द इस तरह आहिस्ता आहिस्ता (जहन्नुम में) ले जाएंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी

وَأُمْلَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ

और मैं उन्हें (दुनिया में) ढील दूंगा बेशक मेरी तद्वीर (पुख्ता और) मज़बूत है

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ

क्या उन लोगों ने इतना भी ख़याल न किया कि आख़िर उनके रफ़ीक़ (मोहम्मद) को कुछ जुनून तो नहीं वह तो बस खुल्लम खुल्ला (अज़ाबे खुदा से) डराने वाले हैं

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا ۚ فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ ٱللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَن عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ ۚ بَعْدَهُ ۚ يُؤْمِنُونَ

क्या उन लोगों ने आसमान व ज़मीन की हुकूमत और खुदा की पैदा की हुई चीज़ों में ग़ौर नहीं किया और न इस बात में कि यायद उनकी मौत करीब आ गई हो फिर इतना समझाने के बाद (भला) किस बात पर ईमान लाएंगे

مَنْ يُضِلِلِ ٱللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ

जिसे खुदा गुमराही में छोड़ दे फिर उसका कोई राहबर नहीं और उन्हीं की सरकशी (व शरारत) में छोड़ देगा कि सरगर्दाँ रहें

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۚ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग क़यामत के बारे में पूछा करते हैं कि कहीं उसका कोई वक्त भी तय है तुम कह दो कि उसका इल्म बस फ़क़त परवरदिगार ही को है वही उसके वक्त मुअय्यन पर उसको ज़ाहिर कर देगा। वह सारे आसमान व ज़मीन में एक कठिन वक्त होगा वह तुम्हारे पास पस अचानक आ जाएगी तुमसे लोग इस तरह पूछते हैं गोया तुम उनसे बखूबी वाकिफ़ हो तुम (साफ़) कह दो कि उसका इल्म बस खुदा ही को है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا ۚ وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ ۚ وَبَشِيرٌ ۚ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं खुद अपना आप तो एख्तियार रखता ही नहीं न नफे का न ज़रर का मगर बस वही खुदा जो चाहे और अगर (बग़ैर खुदा के बताए) ग़ैब को जानता होता तो यक़ीनन मैं अपना बहुत सा फ़ायदा कर लेता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ भी न पहुँचती मैं तो सिर्फ़ ईमानदारों को (अज़ाब से डराने वाला) और वेहशत की खुशख़बरी देने वाला हूँ

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۚ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا ۚ فَمَرَّتْ بِهِ ۚ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ ءَاتَيْتَنَا صُلْدًا ۚ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ

वह खुदा ही तो है जिसने तुमको एक शख्स (आदम) से पैदा किया और उसकी बची हुई मिट्टी से उसका जोड़ा भी बना डाला ताकि उसके साथ रहे सहे फिर जब इन्सान अपनी बीबी से हम बिस्तरी करता है तो बीबी एक हलके से हमल से हमला हो जाती है फिर उसे लिए चलती फिरती है फिर जब वह (ज्यादा दिन होने से बोझल हो जाती है तो दोनो (मिया बीबी) अपने परवरदिगार खुदा से दुआ करने लगे कि अगर तो हमें नेक फरज़न्द अता फरमा तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार होंगे

فَلَمَّا ءَاتَاهُمَا صُلْدٌ ۚ جَعَلَ لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا ءَاتَاهُمَا ۚ فَتَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ

फिर जब खुदा ने उनको नेक (फरज़न्द) अता फ़रमा दिया तो जो (औलाद) खुदा ने उन्हें अता किया था लगे उसमें खुदा का शरीक बनाने तो खुदा (की शान) शिर्क से बहुत ऊँची है

أَيُّشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْءٌ ۚ وَهُمْ يُخْلَقُونَ

क्या वह लोग खुदा का शरीक ऐसों को बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद (खुदा के) पैदा किए हुए हैं

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرٌ ۚ وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ

और न उनकी मदद की कुदरत रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صُمُّتُونَ

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओगे भी तो ये तुम्हारी पैरवी नहीं करने के तुम्हारे वास्ते बराबर है ख्वाह (चाहे) तुम उनको बुलाओ या तुम चुपचाप बैठे रहो

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا ۚ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

बेशक वह लोग जिनकी तुम खुदा को छोड़कर हाजत करते हो वह (भी) तुम्हारी तरह (खुदा के) बन्दे हैं भला तुम उन्हें पुकार के देखो तो अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हारी कुछ सुन लें

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ ۚ يَمْشُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ ۚ يَبْطِشُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ ۚ يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ ۚ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ قُلِ ادْعُوا ۚ شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا ۚ فَلَا تُنْظَرُونَ

क्या उनके ऐसे पाँव भी हैं जिनसे चल सकें या उनके ऐसे हाथ भी हैं जिनसे (किसी चीज़ को) पकड़ सके या उनकी ऐसी आँखें भी हैं जिनसे देख सकें या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुन सकें (ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि तुम अपने बनाए हुए शरीकों को बुलाओ फिर सब मिलकर मुझ पर दाँव चले फिर (मुझे) मोहलत न दो

إِنَّ وَلِيََّ ۚ أَلِلَّهِ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۚ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ

(फिर देखो मेरा क्या बना सकते हो) बेशक मेरा मालिक व मुमताज़ तो बस खुदा है जिस ने किताब कुरान को नाज़िल फरमाया और वही (अपने) नेक बन्दों का हाली (मददगार) है

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ لَا يَسْتَجِيبُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ

और वह लोग (बुत) जिन्हें तुम खुदा के सिवा (अपनी मदद को) पुकारते हो न तो वह तुम्हारी मदद की कुदरत रखते हैं और न ही अपनी मदद कर सकते हैं

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۚ وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

और अगर उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएगा भी तो ये सुन ही नहीं सकते और तू तो समझता है कि वह तुझे (आँखें खोले) देख रहे हैं हालाँकि वह देखते नहीं

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ

(ऐ रसूल) तुम दरगुज़र करना एख्तियार करो और अच्छे काम का हुक्म दो और जाहिलों की तरफ से मुह फेर लो

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

अगर शैतान की तरफ से तुम्हारी (उम्मत के) दिल में किसी तरह का (वसवसा (शक) पैदा हो तो खुदा से पनाह माँगो (क्योंकि) उसमें तो शक ही नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक्फिकार है

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا ۚ فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ

बेशक लोग परहेज़गार हैं जब भी उन्हें शैतान का ख्याल छू भी गया तो चौक पड़ते हैं फिर फौरन उनकी आँखें खुल जाती हैं

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ

उन काफिरों के भाई बन्द शैतान उनको (धर पकड़) गुमराही के तरफ घसीटे जाते हैं फिर किसी तरह की कोताही (भी) नहीं करते

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ ۖ قَالُوا ۚ لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ
هَذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَهُدًى ۖ وَرَحْمَةً ۚ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۚ

और जब तुम उनके पास कोई (खास) मौजिज़ा नहीं लाते तो कहते हैं कि तुमने उसे क्यों नहीं बना लिया (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस इसी वही का पाबन्द हूँ जो मेरे परवरदिगार की तरफ से मेरे पास आती है ये (कुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (हकीकत) की दलीलें हैं

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْءَانُ فَاسْتَمِعُوا ۚ لَهُ ۚ وَأَنصِتُوا ۚ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۚ

और ईमानदार लोगों के वास्ते हिदायत और रहमत हैं (लोगों) जब कुरान पढ़ा जाए तो कान लगाकर सुनो और चुपचाप रहो ताकि (इसी बहाने) तुम पर रहम किया जाए

وَأَذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا ۖ وَخِيفَةً ۖ وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ
وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ۚ

और अपने परवरदिगार को अपने जी ही में गिड़गिड़ा के और डर के और बहुत चीख के नहीं (धीमी) आवाज़ से सुबह व शाम याद किया करो और (उसकी याद से) ग़ाफिल बिल्कुल न हो जाओ

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ ۖ وَيُسَبِّحُونَهُ ۖ وَلَهُ ۖ يَسْجُدُونَ ۖ

बेशक जो लोग (फरिश्ते बग़ैरह) तुम्हारे परवरदिगार के पास मुकर्रिब हैं और वह उसकी इबादत से सर कशी नहीं करते और उनकी तसबीह करते हैं और उसका सजदा करते हैं (206) सजदा

Al-Anfaal

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۖ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ۖ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ۖ ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ

(ऐ रसूल) तुम से लोग अनफाल (माले ग़नीमत) के बारे में पूछा करते हैं तुम कह दो कि अनफाल मखसूस खुदा और रसूल के वास्ते है तो खुदा से डरो (और) अपने बाहमी (आपसी) मामलात की इसलाह करो और अगर तुम सच्चे (ईमानदार) हो तो खुदा की और उसके रसूल की इताअत करो

2

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ ۖ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا ۖ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) खुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल हिल जाते हैं और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके ईमान को और भी ज्यादा कर देती हैं और वह लोग बस अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं

3

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

4

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ ۖ لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ ۖ وَرِزْقٌ ۖ كَرِيمٌ ۖ

यही तो सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के लिए उनके परवरदिगार के हाँ (बड़े बड़े) दरजे हैं और बख्शीश और इज्जत और आबरू के साथ रोज़ी है (ये माले ग़नीमत का झगड़ा वैसा ही है)

5

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا ۖ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكُرْهُونَ

जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें बिल्कुल ठीक (मसलहत से) तुम्हारे घर से (जंग बदर) में निकाला था और मोमिनीन का एक गिरोह (उससे) नाखुश था

6

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ

कि वह लोग हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी तुमसे (ख्वाह माख्वाह) सच्ची बात में झगड़ते थे और इस तरह (करने लगे) गोया (ज़बरदस्ती) मौत के मुँह में ढकेले जा रहे हैं

7

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ

और उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हैं और (ये वक्त था) जब खुदा तुमसे वायदा कर रहा था कि (कुप्फार मक्का) दो जमाअतों में से एक तुम्हारे लिए ज़रूरी है और तुम ये चाहते थे कि कमज़ोर जमाअत तुम्हारे हाथ लगे (ताकि बग़ैर लड़े भिड़े माले ग़नीमत हाथ आ जाए) और खुदा ये चाहता था कि अपनी बातों से हक़ को साबित (कदम) करें और काफ़िरों की जड़ काट डाले

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ

ताकि हक़ को (हक़) साबित कर दे और बातिल का मटियामेट कर दे अगर चे गुनाहगार (कुफ़ार उससे) नाखुश ही क्यों न हो

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِالْفِ ۖ مِنْ أَلْمَلَكَةِ مُرْدِفِينَ

(ये वह वक्त था) जब तुम अपने परवदिगार से फरियाद कर रहे थे उसने तुम्हारी सुन ली और जवाब दे दिया कि मैं तुम्हारी लगातार हज़ार फ़रिशतों से मदद करूँगा

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ ۖ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

और (ये इमदाद ग़ैबी) खुदा ने सिर्फ़ तुम्हारी खातिर (खुशी) के लिए की थी और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएं और (याद रखो) मदद खुदा के सिवा और कहीं से (कभी) नहीं होती बेशक़ खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً ۚ مِنْهُ وَيُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ لِيُطَهِّرَكُم بِهِ ۚ
وَيُذْهِبَ عَنْكُم رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ

ये वह वक्त था जब अपनी तरफ से इत्मिनान देने के लिए तुम पर नींद को ग़ालिब कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरस रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक (पाकीज़ा कर दे और तुम से शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और पानी से (बालू जम जाए) और तुम्हारे क़दम ब क़दम (अच्छी तरह) जमाए रहे

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَأِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبَّتُوا ۚ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ الرُّعْبَ فَأَضْرِبُوا ۚ فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَأَضْرِبُوا ۚ مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۚ

(ऐ रसूल ये वह वक्त था) जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिशतों से फरमा रहा था कि मैं यकीनन तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो मैं बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में (तुम्हारा रौब) डाल दूँगा (पस फिर क्या है अब) तो उन कुफ़ार की गर्दनो पर मारो और उनकी पोर पोर को चटिया कर दो

13

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا ۚ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ

ये (सज़ा) इसलिए है कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की मुखालिफ की और जो शख्स (भी) खुदा और उसके रसूल की मुखालफ़त करेगा तो (याद रहें कि) खुदा बड़ा सख्त अज़ाब करने वाला है

14

ذَلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ

(काफ़िरों दुनिया में तो) लो फिर उस (सज़ा का चखो और (फिर आखिर में तो) काफ़िरों के वास्ते जहन्नुम का अज़ाब ही है

15

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ زَحَفَ ۚ فَلَا تُولُوهُمْ الْأَدْبَارَ

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कुफ़ार से मैदाने जंग में मुकाबला हुआ तो (ख़बरदार) उनकी तरफ पीठ न करना

16

وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبْرَهُ ۚ إِلَّا مُتَحَرِّفًا ۚ لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِتْنَةٍ ۚ فَقَدْ بَاءَ
بِغَضَبٍ ۚ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ وَيُسَّ الْمَصِيرُ

(याद रहे कि) उस शख्स के सिवा जो लड़ाई वास्ते कतराए या किसी जमाअत के पास (जाकर) मौके पाए (और) जो शख्स भी उस दिन उन कुफ़ार की तरफ पीठ फेरेंगा वह यकीनी (हिर फिर के) खुदा के ग़ज़ब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नुम ही हैं और वह क्या बुरा ठिकाना है

17

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ
الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

और (मुसलमानों) उन कुफ़ार को कुछ तुमने तो क़त्ल किया नहीं बल्कि उनको तो खुदा ने क़त्ल किया और (ऐ रसूल) जब तुमने तीर मारा तो कुछ तुमने नहीं मारा बल्कि खुदा खुदा ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मोमिनीन पर खूब एहसान करे बेशक खुदा (सबकी) सुनता और (सब कुछ) जानता है

18

ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ

ये तो ये खुदा तो काफ़िरों की मक्कारी का कमज़ोर कर देने वाला है

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَنْتَهُوا ۖ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا ۖ نَعْدُ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا ۖ وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ

(काफ़िर) अगर तुम ये चाहते हो (कि जो हक़ पर हो उसकी) फ़तेह हो (मुसलमानों की) फ़तेह भी तुम्हारे सामने आ मौजूद हुई अब क्या गुरुर बाक़ी है और अगर तुम (अब भी मुखतलिफ़ इस्लाम) से बाज़ रहो तो तुम्हारे वास्ते बेहतर है और अगर कहीं तुम पलट पड़े तो (याद रहे) हम भी पलट पड़ेंगे (और तुम्हें तबाह कर छोड़ देंगे) और तुम्हारी जमाअत अगरचे बहुत ज्यादा भी हो हरगिज़ कुछ काम न आएगी और खुदा तो यकीनी मामिनीन के साथ है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَلَا تَوَلَّوْا ۚ عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ

(ऐ ईमानदारों) खुदा और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न मोड़ो जब तुम समझ रहे हो

وَلَا تَكُونُوا ۚ كَالَّذِينَ قَالُوا ۚ سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओं जो (मुँह से तो) कहते थे कि हम सुन रहे हैं हालाकि वह सुनते (सुनाते खाक) न थे

ۚ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

इसमें शक़ नहीं कि ज़मीन पर चलने वाले तमाम हैवानात से बदतर खुदा के नज़दीक वह बहरे गूँगे (कुफ़ार) हैं जो कुछ नहीं समझते

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ لَآَسْمَعَهُمْ ۚ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ

और अगर खुदा उनमें नेकी (की बू भी) देखता तो ज़रूर उनमें सुनने की क़ाबिलियत अता करता मगर ये ऐसे हैं कि अगर उनमें सुनने की क़ाबिलियत भी देता तो मुँह फेर कर भागते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ اسْتَجِيبُوا ۚ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ ۚ وَأَنَّهُ ۚ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

ऐ ईमानदार जब तुम को हमारा रसूल (मोहम्मद) ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम खुदा और रसूल के हुक्म दिल से कुबूल कर लो और जान लो कि खुदा वह क़ादिर मुतलिक्क है कि आदमी और उसके दिल (इरादे) के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे

وَاتَّقُوا ۚ فِتْنَةً ۚ لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مِنْكُمْ خَاصَّةً ۚ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنْ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

और उस फितने से डरते रहो जो खास उन्हीं लोगों पर नहीं पड़ेगा जिन्होंने तुम में से जुल्म किया (बल्कि तुम सबके सब उसमें पड़ जाओगे) और यकीन मानों कि खुदा बड़ा सख्त अज़ाब करने वाला है

وَأَذْكُرُوا ۚ إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ ۚ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ ۚ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

(मुसलमानों वह वक्त याद करो) जब तुम सर ज़मीन (मक्के) में बहुत कम और बिल्कुल बेबस थे उससे सहमे जाते थे कि कहीं लोग तुमको उचक न ले जाए तो खुदा ने तुमको (मदीने में) पनाह दी और खास अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाक व पाकीज़ा चीज़े खाने को दी ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَخُونُوا ۚ اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا ۚ أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ ईमानदारों न तो खुदा और रसूल की (अमानत में) ख़्यानत करो और न अपनी अमानतों में ख़्यानत करो हालाँकि समझते बूझते हो

وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ ۚ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और यकीन जानों कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारी आजमाइश (इस्तेहान) की चीज़ें हैं कि जो उनकी मोहब्बत में भी खुदा को न भूले और वह दीनदार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنْ تَتَّقُوا ۚ اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا ۚ ۚ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

और यकीनन खुदा के हों बड़ी मज़दूरी है ऐ ईमानदारों अगर तुम खुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे वास्ते इम्तियाज़ पैदा करे देगा और तुम्हारी तरफ से तुम्हारे गुनाह का कफ़ारा करार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और खुदा बड़ा साहब फज़ल (व करम) है

30

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ
 اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब कुफ़रार तुम से फरेब कर रहे थे ताकि तुमको कैद कर लें या तुमको मार डाले तुम्हें (घर से) निकाल बाहर करे वह तो ये तदबीर (चालाकी) कर रहे थे और खुदा भी (उनके खिलाफ) तदबीरकर रहा था

31

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا قَالُوا ۖ قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا
 أَصْطِيرُ الْأَوَّلِينَ

और खुदा तो सब तदबीरकरने वालों से बेहतर है और जब उनके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो बोल उठते हैं कि हमने सुना तो लेकिन अगर हम चाहें तो यकीनन ऐसा ही (करार) हम भी कह सकते हैं-तो बस अगलों के क्रिस्से है

32

وَإِذْ قَالُوا ۖ اَللَّهُمَّ إِن كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً ۖ مِنْ
 السَّمَاءِ أَوْ أُتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब उन काफ़िरो ने दुआएँ माँगीं थी कि खुदा (वन्द) अगर ये (दीन इस्लाम) हक़ है और तेरे पास से (आया है) तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब ही नाज़िल फरमा

33

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ

हालाँकि जब तक तुम उनके दरमियान मौजूद हो खुदा उन पर अज़ाब नहीं करेगा और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि लोग तो उससे अपने गुनाहो की माफी माँग रहे हैं और खुदा उन पर नाज़िल फरमाए

34

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا ۖ أَوْلِيَاءَهُ ۗ ۚ
 إِنَّ أَوْلِيَاءَهُ ۗ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और जब ये लोग लोगों को मस्जिदुल हराम (खान ए काबा की इबादत) से रोकते हैं तो फिर उनके लिए कौन सी बात बाक़ी है कि उन पर अज़ाब न नाज़िल करे और ये लोग तो खानाए काबा के मुतवल्ली भी नहीं (फिर क्यों रोकते हैं) इसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार लोग हैं मगर इन काफ़िरो में से बहुतेरे नहीं जानते

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً ۚ وَتَصَدِيَةً ۚ فَذُوقُوا ۚ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ

और खानाए काबे के पास सीटियों तालिया बजाने के सिवा उनकी नमाज ही क्या थी तो (ऐे काफिरों) जब तुम कुफ्र किया करते थे उसकी सज़ा में (पड़े) अज़ाब के मज़े चखो

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيَنْفِقُونَهَا ثُمَّ
تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ۚ ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ

इसमें शक नहीं कि ये कुफ़र अपने माल महज़ इस वास्ते खर्च करेंगे फिर उसके बाद उनकी हसरत का बाइस होगा फिर आखिर ये लोग हार जाएँगे और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया (क़यामत में) सब के सब जहन्नुम की तरफ हाके जाएँगे

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضُهُ ۚ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ فَيَرْكُمُهُ ۚ
جَمِيعًا ۚ فَيَجْعَلُهُ ۚ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ

ताकि खुदा पाक को नापाक से जुदा कर दे और नापाक लोगों को एक दूसरे पर रखके ढेर बनाए फिर सब को जहन्नुम में झोंक दे यही लोग घाटा उठाने वाले हैं

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنْ يَنْتَهُوا ۚ يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا ۚ فَقَدْ مَضَتْ
سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ

(ऐे रसूल) तुम काफिरों से कह दो कि अगर वह लोग (अब भी अपनी शरारत से) बाज़ रहें तो उनके पिछले कुसूर माफ़ कर दिए जाएँ और अगर फिर कहीं पलटें तो यक्कीनन अगलों के तरीके गुज़र चुके जो, उनकी सज़ा हुई वही इनकी भी होगी

وَقَتِّلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ ۚ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ ۚ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أَنْتَهُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا
يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

मुसलमानों काफ़िरों से लड़े जाओ यहाँ तक कि कोई फ़साद (बाक़ी) न रहे और (बिल्कुल सारी खुदाई में) खुदा की दीन ही दीन हो जाए फिर अगर ये लोग (फ़साद से) न बाज़ आएँ तो खुदा उनकी कारवाइयों को खूब देखता है

وَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَأَعْلَمُوا ۚ أَنْ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعَمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعَمَ النَّصِيرِ

और अगर सरताबी करें तो (मुसलमानों) समझ लो कि खुदा यकीनी तुम्हारा मालिक है और वह क्या अच्छा मालिक है और क्या अच्छा मददगार है